भारत में अध्यापक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप, समस्याएं एवं समाधान

[*]दीपक कुमार शर्मा, [**]सैयद अब्दुल वाहिद शाह एवं [***]शरद गंगवार

[*]सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

[**]पूर्व छात्र (एम.एड.), बरेली कॉलेज, बरेली

[***]सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत ने शैक्षिक मंच पर सम्पूर्ण विश्व को नेतृत्व प्रदान किया है तथा विश्वगुरु की उपाधि से अलंकृत किया है। इस प्रकार वैश्विक शिक्षण भारत की सांस्कृतिक विरासत रही है तथा इस सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का कार्य शिक्षकों द्वारा किया जाता रहा है। किसी भी राष्ट्र में शिक्षा का प्रचार–प्रसार व वर्तमान पीढ़ी को शिक्षित करने का कार्य गुरु या शिक्षक द्वारा किया जाता है। इस प्रकार राष्ट्र की शैक्षिक सम्पन्नता शिक्षकों पर निर्भर करती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक वर्ग प्रबुद्ध, ज्ञान से परिपूर्ण व शिक्षण कार्य के प्रभावशाली सम्पादन में दक्ष हो जिससे वह अपने दायित्वों व कर्तव्यों का भलीभांति निर्वहन कर सके। इस हेतु वे व्यक्ति जो भविष्य में शिक्षक के रूप में कार्य करना चाहते है या वे व्यक्ति जो वर्तमान में शिक्षक है तथा अपने शिक्षण में नवीनता, आधुनिकता व तकनीकी का समावेश कर अपने शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाना चाहते है ऐसे इच्छित वर्ग को सेवा (शिक्षण) क्षेत्र में प्रवेश से पूर्व व सेवा (शिक्षण) के दौरान अध्यापक शिक्षा प्रदान की जाती है जिससे वे अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाकर स्वयं को एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्थापित कर सके। इस हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों व कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। वर्तमान अध्यापक शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न कालक्रमों का परिणाम है जो विकसित व परिष्कृत रूप में हमारे सामने है। अध्यापन या शिक्षण हेतु औपचारिक प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य ब्रिटिश काल में आरम्भ हुआ। समय के साथ भारत की स्वतंत्रता के पश्चात अध्यापक शिक्षा को विस्तार देने हेतु अनेक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी। परन्तु 17 अगस्त 1995 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थापना को अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम कहा जा सकता है। वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न समस्याएं दृष्टिगोचर होती है परन्तु इनका कुशलतापूर्वक समाधान करके अध्यापक शिक्षा को प्रभावी व उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध आलेख में अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं एवं इन समस्याओं के समाधान हेतु सुझावों को इंगित किया गया है।

संकेत शब्दः– *शिक्षा, शिक्षक, अध्यापक शिक्षा।*

प्रस्तावना :–

शिक्षा बौद्धिक परम्पराओं और तकनीकी निपुणताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संचरण हेतु धुरी का कार्य करती है और सभ्यता के दीपक को प्रदीप्त रखने में सहायक होती है। शिक्षा व्यक्ति के मार्गदर्शन द्वारा राष्ट्र के भाग्य का भी मार्गदर्शन करती है। वस्तुतः शिक्षा उन भावी नागरिकों का निर्माण करती है जिनके ऊपर राष्ट्र का उत्थान निर्भर है। शिक्षा मानव व्यवहार को परिमार्जित कर उसे इस योग्य बनाती है कि वह सांस्कृतिक धरोहर को आगे आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित कर सके। शिक्षा द्वारा मानव सामाजिक जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देता है।

शिक्षा मानव प्रवृत्ति के शोधन तथा रुचियों के स्वस्थ विकास एवं परिष्कार में सहायक है। मानव व्यक्तित्व के संतुलित विकास की दृष्टि से शिक्षा का ध्येय व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का विकास कर उन्हें इस योग्य बनाना है कि वह भावी जीवन में अपने दायित्वों का निर्वाह

सफलता एवं सच्चाई के साथ कर सकें तथा समाज के कुशल एवं सफल सदस्य बन सकें। इस प्रकार शिक्षा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है।

फ्रोबेल के अनुसार–

''शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी शक्तियों का विकास करता है।''

फ्रोबेल महोदय ने शिक्षा को एक प्रक्रिया की संज्ञा दी है। उनका कहना है कि शिक्षा बालक को इस योग्य बनाती है कि वह अपनी अन्तर्निहित जन्मजात शक्तियों का सम्यक विकास कर सके। इस प्रकार शिक्षा बालक की शक्तियों के विकास की एक प्रक्रिया है।

शिक्षक :

शिक्षक ज्ञान, समृद्धि एवं प्रकाश का एक बड़ा स्रोत है। वह एक माली के रूप में न केवल वृक्ष रूपी विद्यार्थियों को पोषित करता है बल्कि उन्हें एक आदर्श मनुष्य के रूप में पल्लवित कर, संस्कार रूपी पुष्प खिलाकर सदगुणों की महक प्रदान करता है।

कबीरदास जी कहते है–

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

अर्थात गुरु कुम्हार और शिष्य घड़ा है। जिस प्रकार कुम्हार प्रयत्न से घड़े को सुघड़ बनाता है उसी तरह गुरु भी विद्यार्थियों के दोषों का परिमार्जन कर उन्हें एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर करता है। शिक्षक या गुरु एक कुम्हार के समान है जिस प्रकार एक कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते समय उसे एक हाथ से संभालकर दूसरे हाथ से आकार देता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी अनुशासन की सहायता से विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करता है।

श्री एस० बालकृष्ण जोशी ने लिखा है– ''एक सच्चा शिक्षक धन के अभाव में भी धनी होता है, उसकी संपत्ति का आंकलन बैंक में जमा धन से नहीं किया जाना चाहिए बल्कि उसने प्रेम एवं समर्पण से जो गुण अपने छात्रों में उत्पन्न किये है, उससे आंकना चाहिए। वह एक सम्राट है, जिसका साम्राज्य उसके शिष्यों के कृतज्ञ मष्तिष्कों में सीमा चिन्हों में अंकित है।'' कोठारी आयोग (1964–66)ने भी शिक्षक की महत्ता प्रतिपादित करते हुए अपने प्रतिवेदन की प्रथम पंक्ति में यह विचार व्यक्त किया है कि ''भारत का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है। वस्तुतः किसी देश का भविष्य, विभिन्न राष्ट्रों में उस देश का स्थान और मानव मात्र की सेवा में उसके द्वारा किया गया योगदान उन व्यक्तियों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जो देश की शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण कार्य संपन्न करते है।''

अध्यापक शिक्षा :

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों– अध्यापक, विद्यार्थी व पाठ्यवस्तु में अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में विद्यार्थी ज्ञानार्जन नहीं कर सकते तथा साथ ही अच्छी पाठ्यवस्तु भी निरर्थक ही सिद्ध होगी। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापन कार्य करने वाला व्यक्ति अपने विषय का ज्ञाता, शिक्षण में निपुण, आदर्श चरित्र का धनी तथा उच्च विचारों का स्वामी हो। इन उद्देश्यों को सानिध्य में रखते हुए अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

कुछ समय पूर्व अध्यापक शिक्षा को अध्यापक प्रशिक्षण के नाम से सम्बोधित किया जाता था। परन्तु वर्तमान अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र अध्यापक प्रशिक्षण से अधिक व्यापक है। अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय सेवापूर्व व सेवारत अध्यापकों को प्रदान की जाने वाले उस शिक्षा से है जो इन अध्यापकों को अध्यापक के उत्तरदायित्वों के सफलतापूर्वक निर्वहन व प्रभावशाली अध्यापन हेतु सक्षम बनाती है।

भारत में अध्यापक शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

वैदिक काल में अध्यापक शिक्षा– वैदिक काल में शिक्षा प्रदान करने का कार्य ब्राह्मण वर्ग द्वारा किया जाता था। इस काल में अध्यापक बनने के लिए किसी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं थी। अध्यापन कार्य करने वाले व्यक्ति कोई औपचारिक प्रमाणपत्र प्राप्त किये बिना ही अध्यापन कार्य करता रहता था। इस प्रकार वैदिक काल में ब्राह्मण वर्ग द्वारा ही अध्यापन का कार्य किया जाता था।

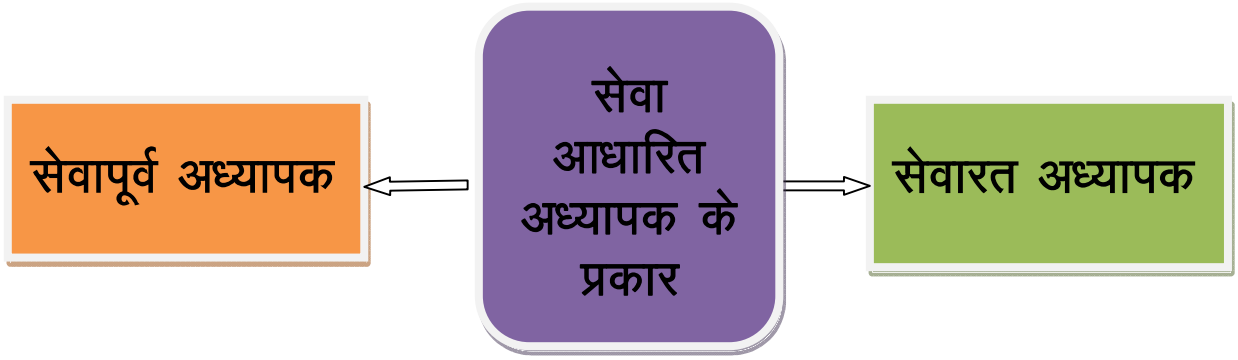
बौद्ध काल में अध्यापक शिक्षा– बौद्ध काल में भी अध्यापक शिक्षा की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी। किसी भी जाति का योग्य व्यक्ति (ब्राह्मण या गैर ब्राह्मण) शिक्षण कार्य कर सकता था।

मध्य काल में अध्यापक शिक्षा– मध्य काल में भी अध्यापक प्रशिक्षण लगभग उपेक्षित ही रहा। इस काल में मकतब तथा मदरसों में हाफिज, मौलाना व मौलवी अध्यापन कार्य करते थे।

ब्रिटिश काल में अध्यापक शिक्षा– भारत में अध्यापन हेतु औपचारिक प्रशिक्षण प्रदान करने का आरम्भ ब्रिटिश काल में हुआ। सन् 1819 में कलकत्ता विद्यालय समाज ने प्राथमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। इसके उपरान्त सन् 1924 में बम्बई में देशी विद्यालय समाज ने तथा सन् 1926 में मद्रास शिक्षा समाज ने भी प्राथमिक अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की। इसके बाद देश में अनेक स्थानों पर अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोले गए।

स्वतंत्र भारत में अध्यापक शिक्षा– भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति (सन् 1947) तक देश में अनेक अध्यापन प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना हो चुकी थी। परन्तु सन् 1995 भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं अध्यापक शिक्षा के सम्बन्ध में सदैव स्मरणीय रहेगा। 17 अगस्त 1995 को अध्यापक शिक्षा के नियमन व नियंत्रण हेतु एक स्वायत्त संस्था के रूप में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् का गठन किया गया। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण भारत में अध्यापक शिक्षा प्रणाली का सुनियोजित व समन्वित विकास करना है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् भारत में अध्यापक शिक्षा प्रणाली को पूर्वनिर्धारित मानदंडों व मानकों के अनुसार नियमित व नियंत्रित करती है।

सेवा आधारित अध्यापक के प्रकार –



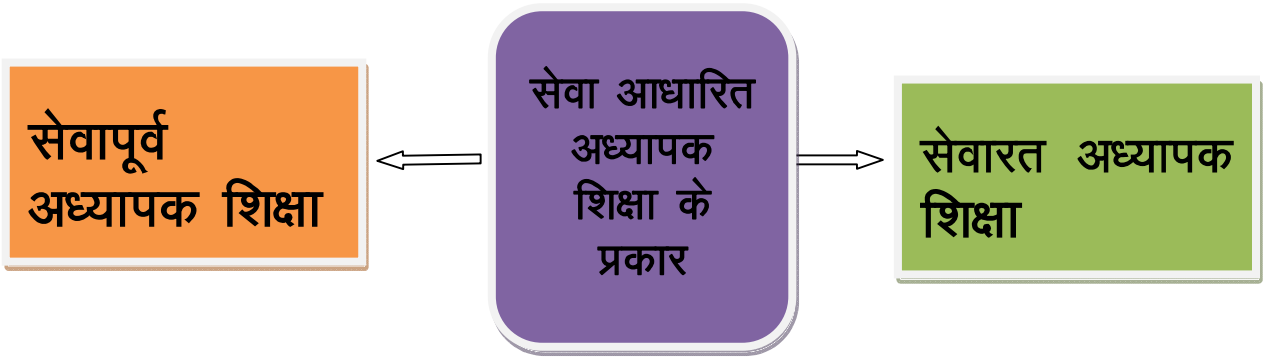
चित्र संख्या 1–सेवा आधारित अध्यापक प्रकार

सेवापूर्व अध्यापक– सेवापूर्व अध्यापक से आशय उन प्रशिक्षु अध्यापकों से है जो शिक्षण में निपुणता प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है तथा भावी अध्यापक बनने की प्रक्रिया में है।

सेवारत अध्यापक– सेवारत अध्यापक से अभिप्राय उन अध्यापकों से है जो वर्तमान में अध्यापन क्षेत्र में है तथा शिक्षण के माध्यम से समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है।

सेवा आधारित अध्यापक शिक्षा के प्रकार –

चित्र संख्या 2–सेवा आधारित अध्यापक शिक्षा के प्रकार



चित्र संख्या 2–सेवा आधारित अध्यापक शिक्षा के प्रकार

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा– सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय प्रशिक्षु अध्यापकों को प्रदान की जाने वाली उस शिक्षा से है जिसके अंतर्गत प्रशिक्षु अध्यापकों को प्रभावशाली शिक्षण हेतु प्रशिक्षित (शिक्षण कौशलों का विकास) किया जाता है। जिससे वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्थापित होकर अपने उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर सके। भारत में सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में अनेक पाठ्यक्रम संचालित है। जिनका उद्देश्य भविष्य के लिए पूर्व प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक के लिए योग्य व प्रशिक्षित अध्यापक तैयार करना है। इस हेतु प्रमुख संचालित पाठ्यक्रम निम्न प्रकार है–

N.T.T., C.T., B.T.C., B.El.Ed., D.El.Ed., B.Ed., M.Ed., D.Ed., B.P.Ed., M.P.Ed., D.P.Ed., I.T.E.P.

सेवारत अध्यापक शिक्षा– वर्तमान युग विज्ञान व तकनीकी का युग है तथा नित्य प्रतिदिन प्रत्येक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हो रहे है। ज्ञान के विस्फोट ने कई नवीन विषयों को जन्म दिया है। अतः शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे ज्ञान की नवीन शाखाओं व शैक्षिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से भलीभांति परिचित होकर स्वयं का समयानुरूप तैयार कर सके तथा नवीन तकनीकी का प्रयोग कर अपने अध्यापन को रुचिकर व प्रभावी बना सके। अतः इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सेवारत अध्यापकों को अध्यापक शिक्षा प्रदान की जाती है। सेवारत अध्यापकों को यह शिक्षा कार्यगोष्ठी, कार्यशाला, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, अभिविन्यास कार्यक्रम, सम्मलेन, विस्तार सेवा कार्यक्रम, अध्ययन समूह, स्कूल कार्यक्रम, शैक्षिक भ्रमण, अध्यापक विनिमय कार्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम, ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आदि के माध्यम से प्रदान की जाती है। इस प्रकार सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा तथा सेवारत अध्यापक शिक्षा दोनों का ही मुख्य उद्देश्य भावी व वर्तमान अध्यापकों के ज्ञान में वृद्धि कर उनके अध्यापन को रुचिकर, प्रभावी व उद्देश्यपूर्ण बनाना है।

अध्यापक शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान :

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान– सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा की प्रमुख समस्याएं व उनके समाधान अग्रलिखित हैः

(1) शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु अपनायी जाने वाली प्रवेश प्रक्रिया दोषपूर्ण है। क्योंकि प्रवेश परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के सैद्धांतिक ज्ञान की जांच तो हो जाती है परन्तु उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व रुचि की जांच नहीं हो पाती। इस कारण शिक्षण क्षेत्र में ऐसे लोग आ जाते

है जिनकी शिक्षण कार्य में रुचि नहीं होती वे तो केवल आजीविका कमाने के साधन के रूप में इसे अपनाते है। फलस्वरूप इन्हे प्रदान की जाने वाली सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहती है। इस हेतु ऐसी प्रवेश प्रक्रिया को अपनाने की आवश्यकता है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व रुचि की जांच (अभिवृत्ति परीक्षण के माध्यम से) भी हो सके तथा उन विद्यार्थियों को ही सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान की जाये जिनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक हो तथा वे शिक्षण कार्य में रुचि रखते हो।

(2) अधिकतर निजी या स्ववित्तपोषित शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने के नाम पर केवल डिग्री वितरित करने का केंद्र बनकर रह गए है। क्योकि इन संस्थानों में प्रशिक्षण के नाम पर केवल औपचारिकता निभायी जा रही है। इस हेतु सक्षम प्राधिकारियों द्वारा इन संस्थाओं की निगरानी की जाये।

(3) शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु आवश्यक संसाधनों का अभाव है। अतः इन संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करके इनके संसाधनों में वृद्धि की जाये।

(4) प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु अध्यापकों का समय–समय पर मूल्यांकन करने हेतु अपनायी जाने वाली परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। क्योकि प्रायः यह देखा गया है कि प्रशिक्षु अध्यापक वर्ष भर कक्षा से अनुपस्थित रहते है तथा परीक्षा के दौरान ही अध्ययन कर अच्छे अंक प्राप्त कर लेते है। अतः इस हेतु प्रशिक्षु अध्यापकों के मूल्यांकन के लिए एक प्रभावी परीक्षा प्रणाली अपनाने की आवश्यकता है।

(5) सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु अनेक पाठ्यक्रम संचालित है, इस कारण इन पाठ्यक्रमों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है। अतः यह आवश्यक है कि सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु सम्पूर्ण देश में एक ही पाठ्यक्रम संचालित हो, जिसमे शिक्षा व्यवस्था के प्रत्येक स्तर (प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च) हेतु भिन्न अध्ययन सामग्री हो।

(6) विभिन्न पत्राचार पाठ्यक्रमों के द्वारा सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान की जा रही है, जिससे सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। अतः इन पत्राचार पाठ्यक्रमों को तत्काल बंद किया जाये।

(7) समय परिवर्तन के कारण शिक्षण ने एक व्यवसाय का रूप ले लिया है। जिसका उद्देश्य समाज को सेवा (शिक्षण) प्रदान करते हुए धन (वेतन) कमाना होना चाहिए। परन्तु वर्तमान में शिक्षण के इस उद्देश्य का अभाव है। अब शिक्षण कार्य केवल धन कमाने का साधन बनता जा रहा है। अतः इस हेतु प्रशिक्षु अध्यापकों को व्यावसायिक नैतिकता का ज्ञान प्रदान किया जाये।

(8) सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में उच्च कोटि के मोलिक शोधों की संख्या अत्यन्त कम है, जिस कारण इस क्षेत्र में नवाचार का अभाव व्याप्त है। अतः इस हेतु उच्च कोटि के मौलिक शोधों के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जाये।

(9) शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में मानकानुसार पर्याप्त संख्या में शिक्षकों का अभाव है, जिससे सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रभावित हो रही है। अतः अति शीघ्र मानकानुसार पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति की जाये।

(10) प्रशिक्षु अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्ति के दौरान विभिन्न विद्यालयों में अपनी सेवाएं प्रदान करते है, फिर भी उन्हें किसी प्रकार की वृत्ति प्रदान नहीं की जाती। अतः प्रशिक्षु अध्यापकों को प्रशिक्षण के समय वृत्ति प्रदान की जाये।

(11) समय–समय पर की जाने वाली शिक्षकों की भर्ती में पदों की संख्या प्रशिक्षणार्थियों के अनुपात में बहुत कम होती है। फलस्वरूप प्रशिक्षणार्थियों में सदैव अपने भविष्य को लेकर असुरक्षा की भावना व्याप्त

रहती है। अतः समस्त विद्यालयों में शिक्षकों के निर्धारित सभी पदों पर भर्ती करके इस समस्या को दूर किया जा सकता है।

(12) सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा प्रदान करने हेतु संचालित पाठ्यक्रमों में यद्यपि अनेक पाठ्यक्रमों में समय के अनुरूप परिवर्तन किया गया है। परन्तु अभी भी अनेक पाठ्यक्रमों में समयानुरूप परिवर्तन की आवश्यकता है।

सेवारत अध्यापक शिक्षा की समस्याएं एवं समाधान– सेवारत अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित प्रमुख समस्याएं व उनके समाधान निम्नलिखित हैः

(1) सेवारत अध्यापकों को अध्यापक शिक्षा प्रदान करते समय पर्याप्त उद्दीपकों का प्रयोग नहीं किया जाता, जिससे सेवारत अध्यापक शिक्षा नीरस बनकर रह जाती है। परिणामस्वरूप सेवारत अध्यापक, अध्यापक शिक्षा ग्रहण करने के दौरान इसमें रुचि नहीं लेते। अतः सेवारत अध्यापकों को अध्यापक शिक्षा प्रदान करते समय पर्याप्त उद्दीपकों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(2) सेवारत अध्यापक शिक्षा उन शिक्षकों को प्रदान की जाती है जो वर्तमान में अपनी सेवाएं (शिक्षण) प्रदान कर रहे है। इनमे अधिकतर शिक्षकों की नौकरी स्थाई होती है तथा उन्हें समय पर वेतन प्राप्त हो जाता है, इस कारण वे सेवारत अध्यापक शिक्षा प्राप्त करने हेतु उदासीन रहते है। अतः इस हेतु उन अध्यापकों को विशेष लाभ (शीघ्र पदोन्नति, वेतन वृद्धि) प्रदान किये जाये जो अध्यापक समय–समय पर सेवारत अध्यापक शिक्षा ग्रहण कर रहे हो।

(3) सेवारत अध्यापकों को अध्यापक शिक्षा प्रदान करने में अनुपयुक्त विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है, जिनमे नवीनता का अभाव होता है। अतः सेवारत अध्यापक शिक्षा के दौरान समयानुरूप नवीन व नवाचारी विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग किया जाये।

(4) वर्तमान युग विज्ञान व तकनीकी का युग है। विभिन्न क्षेत्रों में नित्य–प्रतिदिन अनेक नवीन परिवर्तन हो रहे है, शिक्षा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि सेवारत अध्यापकों को अध्यापक शिक्षा के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में हो रहे इन परिवर्तनों से अवगत कराया जाये। परन्तु सेवारत अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम कई वर्षो के अन्तराल पर परिवर्तित किया जाता है। अतः इस हेतु सेवारत अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में समय–समय पर सुधार किया जाये।

(5) सेवारत अध्यापकों को शिक्षण कार्य के साथ ही अनेक प्रशासनिक कार्यों के दायित्वों का भी निर्वहन करना होता है फलस्वरूप सेवारत अध्यापकों के पास सेवारत अध्यापक शिक्षा प्राप्त करने हेतु समय का अभाव रहता है। अतः समस्या के समाधान हेतु सेवारत अध्यापकों पर प्रशासनिक कार्यों का भार कम किया जाये।

(6) वर्तमान में अधिकतर शैक्षिक संस्थान शिक्षकों की कमी से जूझ रहे है फलस्वरूप सेवारत अध्यापकों को सेवारत अध्यापक शिक्षा प्राप्ति हेतु अवकाश मिलना एक व्यावहारिक समस्या है। अतः शैक्षिक संस्थानों में शिक्षकों के निर्धारित सभी पदों पर भर्ती करके इस समस्या को एक सीमा तक दूर किया जा सकता है।

(7) सेवारत अध्यापकों को सेवारत अध्यापक शिक्षा प्राप्त करने हेतु संस्था से अवकाश लेना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की पढाई प्रभावित होती है। अतः इस हेतु एक सुनियोजित व्यवस्था के अन्तर्गत सेवारत अध्यापकों को इस प्रकार सेवारत अध्यापक शिक्षा प्रदान की जाये जिससे विद्यार्थियों की पढाई कम से कम प्रभावित हो।

निष्कर्ष :–

प्रत्येक राष्ट्र में योग्य अध्यापकों के सृजन हेतु अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। जिसके अंतर्गत अध्यापन कार्य करने का इच्छुक व्यक्ति अध्यापक शिक्षा को ग्रहण कर (प्रशिक्षण प्राप्त कर) अध्यापन कार्य कर सकता है। क्योकि सैद्धांतिक दृष्टि से अध्यापन कार्य एक पेशा है। भारत में भी योग्य व प्रशिक्षित अध्यापकों के सृजन हेतु अध्यापक शिक्षा की व्यवस्था है। इस हेतु भारत में अनेक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्यापक शिक्षा से सम्बंधित विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित है। भारत में वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंताजनक व सोचनीय है क्योकि अधिकतर अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थान अध्यापक शिक्षा के नाम पर डिग्री बाँटने का केंद्र बनते जा रहे है। इन संस्थानों में विद्यार्थी नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित न होकर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने से अछूते रह जाते है तथा केवल पुस्तकों के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करके परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री प्राप्त कर लेते है। परन्तु शिक्षण के दौरान अपने शिक्षण को प्रभावशाली, रुचिकर व उद्देश्यपूर्ण बनाने में असफल रहते है। अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं का यदि विश्लेषण किया जाये तो यह ज्ञात होता है कि अध्यापक शिक्षा सम्बन्धी ये समस्याएं अध्यापक शिक्षा के क्रियान्वयन से सम्बन्धित है। अतः यह आवश्यक है कि सक्षम प्राधिकारियों द्वारा अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं का समय–समय पर निरीक्षण कर इनकी निगरानी की जाये तथा अध्यापक शिक्षा के उचित क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जाये। तभी अध्यापक शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो सकेगी। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि **"अच्छी शिक्षा अच्छे शिक्षकों पर निर्भर है तथा अच्छे शिक्षक अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर हैं।"** अतः अध्यापक शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना नितांत आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची :–

शर्मा, आर.ए. (2021). *अध्यापक शिक्षा–सिद्धांत, अभ्यास एवं शोध.* आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, एस. पी. (2021*). अध्यापक शिक्षा.* कनिष्का पब्लिकेशन, नई दिल्ली.

जैन, एस. (2021). *विद्या प्रश्न बैंक–शिक्षाशास्त्र.* विद्या प्रकाशन मंदिर, मेरठ.

अध्यापक शिक्षा (n.d.) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तराखंड.

www.uou.ac.in

www.ignou.ac.in

How to cite reference of this paper-

Sharma, D. K., Shah, S. A. W., & Gangwar, S. (2022). भारत में अध्यापक शिक्षा का वर्तमान स्वरुप, समस्याएं एवं समाधान. *Educational Metamorphosis, 1*(2), 81-87.